केन्द्र में गठबंधन सरकारे व क्षेत्रीय दलों का परिवर्तित स्वरूपः एक विवेचन

***नीतू गुप्ता**

सारांश – स्वतंत्रता के पश्चात् नवीन लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना के उपरान्त प्रारंभिक चरण में कांग्रेस के रूप में एकदलीय प्रभुत्व व्यवस्था की प्रधानता रही थी। भारत के समाजवादी समाज की परिकल्पना साम्यवाद और समाजवाद मध्य कोई रूप था जिसे प्रथम प्रधानमंत्री में संसद के मार्फत प्राप्त करने का प्रयास किया। प्रारंभिक 17 वर्षों तक पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से कांग्रेस एक छत्र शासन में यह कार्य निर्बाध गति से चलता रहा, यद्यपि उन दिनों भी अनेक व्यावहारिक कारणों से विकास की गति की आशापूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हो सकी थी। किन्तु 70 के दशक के पश्चात् कांग्रेस के रूप में भारतीय व्यवस्था से जैसे ही एकदलीय प्रभुत्व व्यवस्था का अवसान हुआ, दो तथ्य प्रमुख रूप से उभरकर सामने आये। गठबंधन सरकार का प्रचलन और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का केन्द्रीय सरकार में बढ़ता हुआ प्रभुत्व। किन्तु 21वीं शताब्दी में केन्द्रीय सरकार के गठन में 2014 से एकदलीय प्रभुत्व की गठबंधन सरकारों का नवीन स्वरूप उत्पन्न हुआ हैं, उसने क्षेत्रीय दलों की सौदेबाजी की प्रवृत्ति में परिवर्तन कर दिया है। प्रस्तुत शोध पत्र में क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व, केद्रीय राजनीति में उनकी भूमिका और लोकतांत्रिक व्यवस्था में उनकी उपयोगिता के बारे में जानने का प्रयास महत्वपूर्ण व प्रासंगिक है।

मुख्य शब्द – समाजवादी व्यवस्था, गठबंधन सरकारें, पंचवर्षीय योजनायें, क्षेत्रीय राजनीतिक दल, केन्द्रीय राजनीति।

विषय प्रवेश – आधुनिक लोकतांत्रित व्यवस्था के सफल संचालन के लिए राजनीतिक दल अपरिहार्य आवश्यकता है। राजनीति व्यवस्था के सुव्यवस्थित स्वरूप की स्थापना में राजनीति दलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। सार्वभौमिक व्यस्क मताधिकार ने राजनीतिक दलों को लोकतंत्र का नींव का पत्थर बना दिया है। संविधान के माध्यम से भारत को सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न धर्मनिरपेक्ष लोकतांत्रिक गणराज्य का स्वरूप प्रदान किया गया है। शासन व्यवस्था के संचालन के लिए संसदीय लोकतंत्र को अपनाया गया है, जिसकी क्रियान्वित राजनीतिक दलों के माध्यम से ही की जा सकती है। यद्यपि भारत में संसदीय लोकतंत्र ब्रिटिश शासन से विरासत में मिला हुआ माना जा सकता है। किन्तु प्रत्येक देश की राजनीतिक व्यवस्था, सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश के द्वारा निर्धारित होती है। भारत सामाजिक परिवेश का पुरातन आधार है, जिनमें धर्म, जाति, क्षेत्र की भूमिका प्रमुख हैं, जबकि संविधान का स्वरूप आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था के आधार पर टिका हुआ हैं। समाज व राजनीतिक व्यवस्था के मध्य सामंजस्य स्थापित करने में राजनीतिक दलों के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया गया है।

राजनीतिक दलों को परिभाषित करते हुए वर्क ने लिखा है, ''वह एक ऐसे लोगों का एक निकाय है, जो किन्हीं मान्य सिद्धान्तों के आधार पर राष्ट्रीय हितों की अभिवृद्धि चाहते है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि वह ऐसे लोगों का निकाय जिनका सार्वजनिक प्रश्नों के प्रति एक समान दृष्टि है तथा जो सामूहिक क्रियाओं के द्वारा सरकार का नियन्त्रण प्राप्त करने के लिए इसलिए प्रयत्नशील रहते है ताकि उनके दृष्टिकोण के अनुसार ही समस्या का समाधान किया जा सकें।

स्वतंत्रता के पश्चात् भारत में एकदल प्रभुत्व व्यवस्था थी, जिसमें कांग्रेस के द्वारा बहुमत प्राप्त कर सरकार

का गठन किया जा रहा था। 1970 के पश्चात् भारत के केन्द्र और राज्यों की राजनीति में व्यापक परिवर्तन इस रूप में परिभाषित हुआ कि एक दलीय प्रधानता से व्यवस्था बहुदलीय सरकारों की दिशा में प्रवेश करने लगी। जिससे अनेक राज्यों में कांग्रेस का प्रभाव आंशिक एवं कमजोर होने लगा। गठबन्धन की राजनीति का प्रारम्भ, भारत में दल बदल का राजनीति व राजनीतिक विखण्डन के कारण माना जा सकता है। जिसमें क्षेत्रीय दलों का यह प्रयास रहा कि एक दलीय व्यवस्था के विरूद्व गठबन्ध बनाकर ध्रुवीकरण का प्रयास किया जाये। गठबन्धन की राजनीति को संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की एक आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

सरकार निर्माण के लिए अल्पकालीन राजनीतिक स्वार्थों की पूर्ति के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों का गठजोड़ ही गठबंधन के लिए प्रेरित करने वाला प्रमुख कारक हैं। एनसाइक्लोपीडिया ऑफ अमेरिका के अनुसार ''गठबन्ध राजनीतिक दलों का सरकार के गठन के लिए किया जाने वाला राजनीतिक प्रयास है, जबकि कोई भी एक दल सरकार के निर्माण के लिए आवश्यक बहुमत प्राप्त करने में विफल रहा हैं।''

प्रोफेसर ऑग के मत में ''गठबन्धन ऐसी सहकारी व्यवस्था है जिसमें अलग–अलग दल या ऐसी सभी दलों के सदस्य सरकार बनाने के लिए एकजुट हो जाते हैं।''

क्षेत्रीय दलों का स्वरूप – क्षेत्रीय राजनीतिक दलों को उनके कार्य, स्वरूप व विचारधारा के आधार पर दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। उनके प्रभाव क्षेत्र के आधार पर किसी प्रांत विशेष तक के चुनाव राजनीति में उनकी प्रमुख भागीदारी हो और दूसरा भाषा, धर्म के आधार पर निर्मित राज्यों के आन्दोलनों में उनकी भूमिका रही हो। जिनमें प्रमुख रूप से असम गण परिषद, तेलगुदेशम पार्टी, द्रविड मुनेत्र कषगम, कांग्रेस जैसे राजनीतिक दलो को सम्मिलित किया सकता है। कतिपय राजनीतिक दल ऐसे भी है जिनका अखिल भारतीय स्वरूप क्षेत्रीय दलों जैसा ही बनकर रह गया। जिसमें प्रमुख हैं – फॉरवर्ड ब्लॉक, रिवोल्यूशनरी पार्टी आदि। कुछ राज्यों में क्षेत्रीय दल राष्ट्रीय दलों के साथ मिलकर राज्यों की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। क्षेत्रीय दलों के इन नेताओं की राज्यों की राजनीति में तो महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, किन्तु केन्द्रीय राजनीति में इनकी नीतियों और नेताओं को ज्यादा महत्व नहीं मिल पाया है।

राज्य आधारित दलों कि विचारधारा के आधार पर कोई निश्चित विभाजन नहीं किया जा सकता है। इनमें से कुछ दल करिश्मावादी व्यक्तित्व पर आधारित हैं, इनकी सम्पूर्ण विचारधारा व्यक्ति विशेष के इर्द–गिर्द घूमती रहती है। विचारधारा से अधिक ये राजनीतिक दल अपने प्रभाव क्षेत्रीय संस्कृति, भाषा जैसे क्षेत्रवादी मानदण्डों पर आधारित क्षेत्र विशेष के इतिहास और क्षेत्रीय पहचान को उजागर करते हुए नवीन राज्यों का निर्माण इन दलों के गठन का प्रमुख आधार है।

क्षेत्रीय दलों का उदय – भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का अस्तित्व नवीन तथ्य नहीं हैं, किन्तु राष्ट्रीय राजनीति में इनका प्रवेश नवीन घटना चक्र के रूप में माना जा सकता है। आजादी के बाद भारतीय संघ का गठन असंख्य सामजिक और राजनीतिक विविधताओं को अपने में सहेजने का प्रयास था जो उस देश की विदेशी विद्वानों की नजर में एक अस्वाभाविक शब्द बनाते थे उन विद्वानों को लगता था कि भारत एक आधार शब्द के तौर पर इतना अस्वाभाविक है कि ज्यादा दिनों तक वजूद नहीं बना रह पायेगा।[1]

वर्तमान में देश में कई दशकों के पश्चात् एक दलीय बहुमत वाली सरकार बनी हैं, किन्तु इसके पीछे दो दशकों तक गठबंधन सरकारों का दौर रहा हैं। उन दशकों में कोई भी सरकार क्षेत्रीय दलों के समर्थन के बिना नहीं बन पा रही थी। तमाम क्षेत्रीय दल अपने–अपने राज्यों के लिए ज्यादा संसाधनयुक्त मंत्रालय या फिर ज्यादा वित्तीय मदद का दबाव डाल रहे थे।[2]

आजादी के पश्चात् से ही भारत में क्षेत्रीय राजनीतिक दल अस्तित्व में आ गये थे और अलग–अलग राज्यों में उन्होनें मजबूत राजनीतिक भूमिका और कहीं–कहीं सरकार बनाना भी शुरू कर दिया था। यह एक स्वाभाविक राजनीतिक प्रक्रिया थी, क्योंकि आजादी के समय से ही कांग्रेस पार्टी की मशीनरी ही इतनी विशाल थी कि उसमें देश की विविध राजनीतिक, सामाजिक आकांक्षायें स्थान पा लेती थी, लेकिन आजादी के बाद के दशकों में ऐसा होना बंद हो गया था।

1977 के संसदीय चुनावों में जनता दल सरकार के सहयोगी के रूप में अकाली दल व डीमके ने सरकार का समर्थन किया, यद्यपि जनता दल 295 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत प्राप्त राजनीतिक दल था। कुल मिलाकर 51 सीटें क्षेत्रीय दलों को प्राप्त हुई थी। 1980 की इन्दिरा लहर ने क्षेत्रीय दलों के नवीन स्थापित अस्तित्व को समाप्त कर दिया और इनका संख्या बल 35 सीटों तक सीमित होकर रह गया। आठवीं लोकसभा चुनावों में यद्यपि कांग्रेस 415 सीटों के साथ पूर्ण बहुमत प्राप्त राजनीतिक दल था, किन्तु क्षेत्रीय दलों ने अपने आँकडें को 75 तक पहुँचा दिया था और राष्ट्रीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों का प्रभाव धीरे–धीरे बढ़ने लगा।

1992 के दशक में राजनीतिक संघवाद और अन्तर्राष्ट्रीय उदारीकरण के मामले में भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में जो परिवर्तन हुए हैं, उनका महत्वपूर्ण पहलू 1989 में नई दिल्ली में मौजूद गठबन्धन सरकारें और अल्पमत सरकारें भी है। क्षेत्रीय राजनीति दल और गठबन्धन की राजनीति ने अपराधीकरण को भी तेज किया हैं। क्षेत्रीय दलों की मदद से गठबंधन की राजनीत ने समूची राजनीतिक व्यवस्था में भ्रष्टाचार का रोग फैलाने का कार्य किया ही।[3] बदलती राजनीतिक तस्वीर के बीच एक दलीय प्रभुत्व वाली बहुदलीय व्यवस्था के बजाय राजनीतिक बहुलवाद कायम हो गया। क्षेत्रीय, भाषायी ओर सांस्कृतिक स्तर पर आकांक्षाएं उत्पन्न हुई, कई प्रकार की राजनीतिक और सामाजिक विविधतायें सामने आई, जिसने नस्लीय जातींय, धार्मिक और ऐसे ही अन्य पहलुओं को स्वर दिया। क्षेत्रीय चेतना ने कई राजनीतिक दलों को बढ़ावा दिया।[4]

गांधी परिवार का प्रभाव जैसे ही कांग्रेस से समाप्त हुआ वैसे ही भारतीय राजनीति का स्वरूप पूर्णतः परिवर्तित हो गया और एक दलीय प्रभुत्व की समाप्ति और गठबंधन सरकारों का निर्माण भारतीय राजनीति का प्रमुख तत्व बन गया। क्षेत्रीय दलों के समर्थन से निर्मित ऐसी सरकारों का गठन होने लगा जो कि मुख्यतः सौदेबाजी पर आधारित है और क्षेत्रीय हित राष्ट्रीय राजनीति पर हावी होने लगे। अस्थिर सरकारों के काल में व्यवस्था का संक्रमणकाल प्रारम्भ हो गया, जिसमें कि कांग्रेस का एक दलीय प्रमुख समाप्ति की ओर था और गठबंधन सरकारें पूर्णतया स्थापित नहीं हो पायी थी।

1996 के लोकसभा चुनावों में खण्डित जनादेश के कारण सरकार के गठन में क्षेत्रीय दलों की भूमिका प्रमुख हो गयी थीं इन चुनावों में पहली बार भाजपा 161 सीटों के साथ सबसे बड़े राजनीतिक दल के रूप में उभरी, किन्तु सरकार निर्माण के आवश्यक संख्या में बहुत दूर होने के कारण क्षेत्रीय दलों का समर्थन सरकार के निर्माण के लिए आवश्यक हो गया। इन चुनावों के पश्चात् भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय दलों को बँटवारा कांग्रेस समर्पित व भाजपा समर्पित दलों के रूप में हो गया। संसदीय लोकतंत्र के इतिहास में सर्वाधिक अल्पकालीन सरकार का अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में गठन किया गया, जिसका की कार्यकाल मात्र 13 दिन रहा और वाजपेयी पर्याप्त बहुमत प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय दलों का समर्थन प्राप्त करने में पूर्णतया असफल रहे। इससे इस तथ्य का भी उदय हुआ कि क्षेत्रीय दल कांग्रेस व बीजेपी के पश्चात् तीसरे मोर्चे के रूप में ये केन्द्रीय राजनीति में अपना प्रमुख स्थान बना चुके हैं। इसके पश्चात् 13 राजनीतिक दलों के समर्थन से एच.डी. देवगौड़ा के नेतृत्व में नेशनल फ्रंट की सरकार का निर्माण किया, किन्तु यह सरकार भी अपना कार्यकाल पूर्ण नहीं कर सकी। 1998 के लोकसभा चुनावों में क्षेत्रीय दलों ने अपना प्रभाव पूर्णतया स्थापित कर लिया और 16वीं लोकसभा तक केन्द्रीय स्तर पर कोई भी

राजनीतिक दल बगैर क्षेत्रीय दलों के समर्थन के सरकार बनाने में पूर्णतया असमर्थ रहा है।

गठबंधन सरकार का वर्तमान स्वरूप – भारत के विविधतापूर्ण सामाजिक व सांस्कृतिक स्वरूप के कारण स्वतंत्रता पश्चात् अनेक क्षेत्रीय दलों की उत्पत्ति एक स्वाभाविक प्रक्रिया मानी जा सकती है। अनेक राज्यों की सरकारों के गठन में उनकी भूमिका भी अस्वाभाविक नहीं थी, किन्तु 90 के दशक के पश्चात् राजनीति का जो संशयकाल भारत में उत्पन्न हुआ था उनमें इन दलों की भूमिका अवश्य स्थिरता के लिए संकट उत्पन्न कर रहा था।[5]

गठबंधन सरकार के परिणामस्वरूप भारत में दो सकरात्मक परिवर्तन अवश्य उत्पन्न हुए। प्रथम अनुच्छेद–356 का दुरूपयोग किसी सीमा तक नियन्त्रित हुआ, क्योंकि जो क्षेत्रीय दल राज्यों में सरकार बनाये हुए थे, वे ही दल केन्द्र सरकार में भी समर्थन प्रदान कर रहे थे।[6] द्वितीय भारतीय संविधान के मूल ढांचे के मुख्य तत्व संघात्मक व्यवस्था का एक नवीन स्वरूप उत्पन्न हुआ हैं, जिसमें केन्द्र व राज्य सम्बन्धों में सकारात्मकता प्रतीत होने लगी। राज्यों की क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की केन्द्रीय सरकार में भागीदारी होने के कारण एकात्मक संघीय व्यवस्था के स्वरूप में परिवर्तन हुआ है। जिसमें केन्द्र सरकार अपनी मनमर्जी राज्यों पर थोपती आई है।[7] केन्द्र में गठबंधन सरकारों से पूर्व केन्द्र राज्य सम्बन्धों में माँगों को पूर्ण करने के लिए संघर्ष बना रहता था, वह अब मांगों को पूर्ण करने के लिए दबाव बनाने तक सीमित हो गया है। सत्ता साझा करने और राजनीतिक समझौते के लिए राजनीतिक गठबंधन की बाध्यता थी और उसे मतदाताओं की राजनीतिक चेतना तथा फैसले लेने की परिपक्वता के नये स्तर के रूप में देखा जाना चाहिए।

निष्कर्षात्मक – 14वीं लोकसभा के गठन से भारत में गठबंधन सरकारों से स्वरूप में जो क्रमिक परिवर्तन प्रारम्भ हुआ, वह वर्तमान 17वीं लोकसभा तक स्थायी प्रतीत होने लगा। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में क्षेत्रीय दलों की गैर–मौजूदगी में सरकार का गठन मुश्किल प्रतीत होने लगा है। क्योंकि राजनीति दो प्रमुख गठबंधनों कांग्रेसीय मोर्चा व भाजपानीत मौर्चा में विभाजित हो गई है। 17वीं लोकसभा में भारतीय राजनीति में गठबंधन सरकारों का एक नवीन प्रतिमान उपस्थित हुआ है, जिसमें भारतीय जनता पार्टी ने सरकार निर्माण के लिए पर्याप्त बहुमत प्राप्त किया व उसके सहयोगी दलों के साथ मिलकर एक मजबूत सरकार का गठन किया है। वर्तमान सन्दर्भों में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारतीय राजनीति में केन्द्रीय सरकारों के गठन में क्षेत्रीय दलों की भूमिका बनी रहेगी, किन्तु विकल्प के अभाव व भारतीय जनता पार्टी के मजबूत आधार के कारण उनकी शक्तियों की प्रबलता में अवश्य कमी होती रहेगी।

***सहायक आचार्य**
राजनीति विज्ञान विभाग
स्वर्गीय पंडित नवलकिशोर शर्मा
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, दौसा

संदर्भ सूची :–

1. जी. सी. मल्होत्रा, कोएलिशन गर्वनेन्स एण्ड पॉलिटिकल स्टेबिलिटी, द जनरल ऑफ पॉलियैमैन्ट्ररी इन्फोमेशन, वॉल्यूम ग्स्ट नम्बर 3 सितम्बर, 2000, पृ. 392
2. डी. देवनाथन, स्ट्रे–थनिंग कोएलिशन एक्सपेरिमेंट ऑफ सेन्टर : अ फ्यू सजेशन्स, थर्ड कान्सेप्ट, खंड–12, क्रमांक–143, जनवरी, 1999, पृ. 26
3. विस्टन चर्चिल, इंडिया स्पीचेज एण्ड इंट्रोइक्शन (लंदन) थार्नटन बटरवर्च, 1931, पृ. 31

4. योजना दिसम्बर, 2015
5. ई. सुधाकर, कोएलिशन इरा बइन इंडियन डेमोक्रेसी थर्ड कॉन्सेप्ट, खंड—18, क्रमांक 212, अक्टुबर, 2004, पृ. 11—12
6. विद्या स्टोम्स, कोअलिशन गवर्नमेंट्स फॉल्ट लाइन्स इंडियन पॉलिटी, अजय भंडारी द्वारा सम्पादित संघ सरकार विषयक विधानसभा सचिवालय, जनवरी—जून, 2000, पृ. 10
7. तेजिन्दर रिजनल पार्टीस इन नेशनल पॉलिटिक्स के.के. पब्लिकेशन्स, दरियागंज, नई दिल्ली, 2008, पृ. 249
8. आशीष बनर्जी, द फेडरल कोएलिशन सेमिनार, 459, नवम्बर 1997, पृ. 38
9. वही, पृ. 222
10. Vitindia.org.article/